ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

वैदिक सौर शक्ति विमर्श

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा*

भारतीय चिन्तन परम्परा में ज्ञान का आदिस्रोत वेद को माना जाता है। वेद मूलतः विधानशास्त्र हैं अतः वेदों में ऊर्जा (शक्ति) सम्बन्धी चिन्तन का होना स्वाभाविक है। यहाँ ऊर्जा (शक्ति) के विभिन्न स्रोतों का उल्लेख प्राप्त होता है यथा– जल, प्रस्थर, वनस्पति, औषधियाँ, अग्नि, सूर्य, समुद्र, खान, भूगर्भ इत्यादि। यहाँ विवेच्य है– सौर शक्ति अथवा सौर ऊर्जा। विभिन्न कोष एवं निर्वचन ग्रन्थों में 'सौर' शब्द की निष्पन्नता के उल्लेख प्राप्त होते हैं– अमरकोष[1] एवं वामनशिवराम आप्टे[2] के शब्दकोष के अनुसार सौर शब्द **सूर+अण्** के योग से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है सूर्य सम्बन्धी तथा ऊर्जा शब्द **ऊर्ज्ज+णिच्+अच्** के योग से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है– उत्साह, बल, स्फूर्ति। हलायुध कोश में **ऊर्ज्जयति उत्साहयति जिगीषून्** इस प्रकार व्युत्पत्ति की गई है।[3] निरुक्तकार यास्क ने सूर्य का स्थान द्युलोक बताया है। निरुक्त में सूर्य का निर्वचन **'सृ'** आगे बढ़ना अथवा **'सु'** ईद्= प्रेरित करना अर्थो में किया गया है। मित्र और सविता नामक देवों के रूप में भी इसी शक्ति की उपासना की गई है।

सूर्य हमारे लिए ऊर्जा (शक्ति) का अखण्ड भण्डार है। सूर्य के बिना चराचर जगत् का अस्तित्व असम्भव है। अतः हम सूर्य रहित जगत् की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यही कारण है कि हमारे वैदिक ऋषियों ने सौर शक्ति की विविधरूपों में प्रार्थनाएँ की हैं–

उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवे दिवे ज्योग्जीवाः प्रति पश्येम सूर्य[4]
ज्योक् च सूर्य दृशे .....।[5] **सूर्यः ते तन्वे शं तपति .....।**[6]

अर्थात् आयुष्यवर्धक सूर्य को आकाश में नित्य उदित होते हुए अनेक वर्षों तक देखें, हमें निरन्तर सूर्य के दर्शन होते रहें। यह सूर्य मनुष्य को सुख प्रदान करने के लिए ही तपता है। इस प्रकार की अनेक प्रार्थनाएँ वेद में

* अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, संस्कार भारती स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बगरू, जयपुर

दृष्टिगोचर होती हैं।

सूर्य संसार की आत्म शक्ति (Soul)– वेद में सूर्य को संसार की आत्मा कहा गया है–

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।[7]

सूर्य ही सौरमण्डल के अन्य ग्रहों उपग्रहों पर नियन्त्रण रखता है। वही समस्त सौरमण्डल को ऊर्जा प्रदान करता है। सूर्य की ऊर्जा से ही संसार के समस्त चराचर जगत् में गति, प्रगति, विकास एवं विलास व्याप्त है।

सूर्य के द्वारा ही संसार को जीवन शक्ति प्राप्त होती। यही कारण है कि वैदिक ऋषि ने सूर्य को आत्मा कहा है। यह सूर्य समाप्त न होने वाला तेजपुंज है।[8]

नानासूर्य– ऋग्वेद में अनेक सूर्यों **'नानासूर्याः'** का उल्लेख है। एक स्थान पर **सप्त आदित्याः** से सात सूर्यों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं। अर्थात् सूर्य अनेक हैं, सप्त आदित्या से तात्पर्य सात सौर मण्डल से है–

सप्त दिशो नानासूर्याः। देवा आदित्या ये सप्त।[9]

अथर्ववेद के अनुसार इन सात सूर्योः का केन्द्रीय सूर्य कश्यप है। ये सात सूर्य उसके अंग भूत हैं – **कश्यप.....यस्मिन् आर्पिताः सप्त साकम्।**[10] तैत्तिरीय–आरण्यक में इन सात सूर्यों के नामों का भी उल्लेख है– आरोग, भ्राज, पटर, पतंग, स्वर्णर, ज्योतिषीमान् और विभास।[11]

सौर ऊर्जा के स्रोत– वैदिक ऋषियों के अनुसार वायु, अप और अग्नि सूर्य के मूलभूत द्रव्य हैं। इस सन्दर्भ में शतपथ ब्राह्मण में **अश्मापृश्नि** शब्द प्राप्त होता है। ऋग्वेद में **पृश्निरश्मा**[12] शब्द मिलता है। आधुनिक विज्ञान भी सूर्य के इन तीन मूल द्रव्यों को स्वीकार करता है। इन्ही तीनों द्रव्यों में परस्पर क्रिया–प्रतिक्रिया होने से सूर्य में ऊर्जा निर्मित एवं विसर्जित होती है। अथर्ववेद के अनुसार सूर्य की ऊर्जा का आधार सोम है। आधुनिक विज्ञान में इस सोम तत्त्व को हाइड्रोजन (Hydrogen, H2 & Helium, He) कहा जाता है। –**सोमेन– आदित्या बलिनः।**[13] अर्थात् इस सोम तत्त्व से सूर्य ऊर्जा को प्राप्त करता है।

यजुर्वेद में इसे भिन्न रूप में प्रस्तुत किया गया है। मन्त्र के अनुसार सूर्य में दो प्रमुख तत्त्व प्राप्त होते हैं– 1. **'अपां रसम्'** जल का सार भाग जो ऊर्जा के रूप में है। **उद्वयस्** शब्द ऊर्जारूप या गैसरूप अर्थ का बोधक है। जल का यह सार भाग ही हाइड्रोजन (Hydrogen) है। हाइड्रोजन के लिए **'अपांरसः'** इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया गया है। 2. **'अपां रसस्य यो रसः** का अर्थ जल के सार भाग का सारभाग है। जल का सारभाग हाईड्रोजन है और उसका सारभाग हीलियस (Helium) है।[14] मन्त्र में 'सूर्य सन्तं समाहितम्' के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि ये दोनों तत्त्व सूर्य में विद्यमान हैं–

अपां रसम् उद्वयसं, सूर्ये सन्तं समाहितम्।
अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमम्।।[15]

आधुनिक विज्ञान के अनुसार सूर्य में 90 प्रतिशत हाईड्रोजन, 8 प्रतिशत हीलियम एवं 2 प्रतिशत अन्य द्रव्य हैं। सूर्य की सतह पर 6 हजार डिग्री से.ग्रे. तापमान पाया जाता है। इसके आभ्यन्तर भाग में तापमान 1 करोड़ 30 लाख डिग्री से.ग्रे. का अनुमान किया गया है। इस ताप की अधिकता के कारण ही हाईड्रोजन गैस हीलियम के रूप में परिवर्तित हो जाता है, इसे वर्तमान विज्ञान की भाषा में तापीय न्युक्तिक अभिक्रिया (Thermo-nuclear Reactions) कहा जाता है। गैसों के इस रूपान्तरण के कारण सूर्य को निरन्तर विशाल ऊर्जा प्राप्त होती रहती है। सूर्य को अपनी इस ऊर्जा के लिए प्रतिसेकेण्ड पचास लाख टन द्रव्यमान की आवश्यकता होती है।

विश्व की आधुनिकतम प्रयोगशालाओं में हाईड्रोजन बम के द्वारा इतनी भयंकर ऊर्जा को उत्पन्न किया जा सकता है। परन्तु यह ऊर्जा सेकेण्ड के एक अंश तक ही स्थिर रह पाती है। यही ऊष्मा सूर्य में करोडों वर्षों से निरन्तर उत्पन्न हो रही है परन्तु सूर्य का अस्तित्व यथावत् है। यही कारण है कि वैदिक ऋषियों ने सूर्य को कभी भी समाप्त न होने वाला तेजपुन्ज कहा है।[16]

सूर्य की सप्त रश्मियाँ– वस्तुओं में अपना स्वयं का वर्ण (रंग) नहीं

होता है। समस्त वस्तुएँ सूर्यरश्मियों से वर्ण प्राप्त करती हैं। सूर्य ही समस्त रंगों का स्रोत है – **तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृपासि सूर्यम् – विश्वमाभासि रोचनं।**

सूर्य की किरणों से प्रकृति में निम्न परिवर्तन होते हैं–

1. तरणि (रंग परिवर्तन)
2. दर्शतो (प्रकाश– लाईट)
3. विश्व को रोचक लगना
4. ज्योति (Heat की प्राप्ति)

वैदिक ऋषि सूर्यरश्मि–विज्ञान से भली भाँति परिचित थे, उन्हें ज्ञात था कि सूर्य की सात रंग की किरणे जगत् में 7 रंगो को उत्पन्न करती हैं–**'अवधिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्त रश्मयः'** उक्त सप्तविध सूर्यरश्मियाँ ही उच्च मध्यम एवं निम्न भेद से 21 प्रकार की हो जाती हैं। वेद में इसको त्रिषप्ता (3x7= 21) कहा गया है। इन रंगो के मिश्रण से अनेक रंगो का निर्माण होता है। इस सूर्यरश्मिविज्ञान के सम्बन्ध में अथर्ववेद में अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं –

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।[17]

विश्वा रूपाणि जनयन् युवा कविः।[18]

इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में भी उल्लेख मिलते हैं।

यूसीमा कृण्वन् तमसे विपृचे ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम्।
तं सूर्य हरितः सप्त यह्वीः स्पाशं विश्वस्य जगतो वहन्ति।।[19]

अर्थात् स्थिर सत्ता वाली 7 रंग की किरणें अन्धकार को हरने वाली हैं। प्रकाशमण्डल को समाप्त न करती हुई जगत् को रूप प्रदान करती हैं।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार सूर्य की सात किरणे जब PRISM (त्रिकोणीय शीशा) में होकर निकलती हैं तो वे 7 रंगो में विभक्त हो जाती हैं VIOLET, INDIGO, BLUE, GREEN, YELLOW, ORANGE और RED.

आकाश में दिखने वाला इन्द्रधनुष का कारण भी यही सप्तविध

रश्मियाँ हैं। सूर्य की ये रश्मियाँ बादल के काँचरूपी जलबिन्दुओं से निकलने पर सातरंगों में विभक्त हो जाती हैं। यह प्रकरण ऋग्वेद में भी प्राप्त होता है–

सप्तत्वा हरितो रथे वहन्ति देवसूर्यः। शोचिष्केशं विचक्षणः।।
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्यः ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः।।[20]

इन सूर्य रश्मियों के नाम एवं गुणधर्मों का उल्लेख भी वैदिक वाङ्मय में प्राप्त होता है– वायुपुराण में प्रमुख सात किरणों का नाम इस प्रकार है–

1. सुषुम्णः 2. हरिकेशः 3. विश्वकर्मा 4. विश्वश्रवाः या विश्वव्यचाः 5. संपद्वसुः या संयद्वसु, 6. अर्वावसुः या अर्वाग्वसु एवं 7. स्वराट्। इन किरणों के निर्देश ऋग्वेद[21], कौषीतकी ब्राह्मण[22] शतपथब्राह्मण[23] एवं तैतिरीयसंहिता[24] में प्राप्त होते हैं।

उक्त सात प्रमुख किरणों के अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण तथा प्रभावक सौरकिरणों के, रंग एवं तीव्रता के वैदिकग्रन्थों में निर्देश प्राप्त होते हैं यथा– अङ्गिरसः, आदित्याः, वृष्टिवनिः, मरीचिपाः, सुरुचः, अमाः, हंसाः, ऋषभः, सुपर्णाः, हरितः, शुचिकिरणः, अक्षितयः, शिपयः, पशुः, सुकृतः आदि।

वेद में सूर्य की विभिन्न शक्तियों का वर्णन प्राप्त है। सूर्य में आकर्षणशक्ति (Magnetic Power) है। इस शक्ति से ही सूर्य समस्त द्युलोक को धारण करता है–**सूर्येण उत्तभिता द्यौः।**[25]**, अस्कम्भने सविता द्याम अदृंहत्।**[26] इसी शक्ति से सूर्य पृथ्वी को भी धारण करता है––**सविता यन्त्रैः पृथिवीम्–अरम्णात्।**[27]

सूर्य को आरोग्यदाता,[28] विषहर्ता[29], कृमिनाशक,[30] दीर्घ आयुष्य दाता[31] कहा गया है।

इस प्रकार प्रकृति की महत्तम शक्ति के प्रतिनिधि सूर्य देवता अपने स्थूल रूप में परम तेजस्वी हैं, अपने सूक्ष्मरूप में प्रकृति एवं प्राण के संचालक हैं और वैदिक ऋषियों के गूढ आध्यात्मिक चिन्तन में अद्वितीय चेतना शक्ति का प्रतिरूप रहे हैं।

अन्त में कहा जा सकता है कि वेद में केवल कर्मकाण्ड या केवल आध्यात्मिक देवोपासना ही नहीं है प्रत्युत समग्र जीवन का ज्ञान–विज्ञान समाविष्ट है। इस वेदविज्ञान पर अधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

सन्दर्भ –

1. अमरकोष, पृ. 40
2. वमन शिवराम आप्टे, संस्कृत– हिन्दी कोश पृ. 1131
3. हलामुध कोश पृ. 182
4. ऋग्वेद. 10.7.7
5. अथर्ववेद. 12.1.18
6. अथर्ववेद 8.1.5
7. ऋग्वेद– 1.115.1, यजुर्वेद 7.42, अथर्ववेद 13.2.35
8. ऋग्वेद– 3.26.7
9. ऋग्वेद–9.114.3
10. अथर्ववेद–13.3.10
11. तैत्तिरीय आरण्यक 1.7.1
12. ऋग्वेद–5.47.3
13. अथर्ववेद–14.1.2
14. कपिलदेव द्विवेदी, वेदों में विज्ञान, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर, पृ. 13
15. यजुर्वेद– 9.3
16. ऋग्वेद– 3.26.7
17. अथर्ववेद–1.1.1
18. अथर्ववेद–13.1.11
19. ऋग्वेद–4.13.3
20. ऋग्वेद 1.50. 8–9
21. सूर्यरश्मिर्य हरिकेशः– ऋग्वेद 10/139/1
22. असौ वै विश्वकर्मा योऽसौ तपति। कौषितकी ब्राह्मण 5/5

23. असौ ..... विश्वव्यचाः ..... व्यचो भवति। शतपथ ब्राह्मण– 8/1/2/1/, 6/1/18
24. संयच्च प्रचेताश्चाग्नेः सोमस्य सूर्यस्य। तैत्तिरीय संहिता– 4/4/11/2
25. ऋग्वेद– 10.85.1
26. ऋग्वेद– 10.149.1
27. ऋग्वेद– 10.149.1
28. अथर्ववेद– 1.12.2
29. अथर्ववेद –6.100.1
30. अथर्ववेद –2.32.1
31. अथर्ववेद –3.31.7